एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम्।।२२।।

एतैः=इन से; **विमुक्तः**=मुक्त हुआ; **कौन्तेय**=हे अर्जुन; **तमः द्वारैः**=नरक के द्वारों से; **त्रिभिः**=तीनों; **नरः**=मनुष्य; **आचरति**=आचरण करता है; **आत्मनः**=आत्मा के; **श्रेयः**=कल्याण-साधन का; **ततः**=उससे; **याति**=प्राप्त होता है; **पराम्**=परम; **गतिम्**=गति को।

अनुवाद

हे अर्जुन ! इन तीनों नरक के द्वारों से मुक्त पुरुष स्वरूप-साक्षात्कार के अनुरूप साधन का आचरण करता है और इससे शनैः-शनैः परमगति को प्राप्त हो जाता है।।२२।।

तात्पर्य

काम, क्रोध और लोभ—मानवजीवन के इन तीनों शत्रुओं से बिल्कुल सजग रहना चाहिए। मनुष्य इन विकारों से जितना अधिक मुक्त होगा, उतना ही उसका सत्त्व अधिक शुद्ध होता जायगा। तब वह वैदिक शास्त्रों के विधि-विधान का आचरण कर सकेगा। मानव जीवन के संयम के पालन से शनैः-शनैः स्वरूप-साक्षात्कार के स्तर पर आरूढ़ हुआ जा सकता है। यदि कोई भाग्यशाली इस अभ्यास से कृष्णभावनाभावित हो जाय, तो उसकी सफलता निश्चित है। वैदिक शास्त्रों में शुद्धिकरण के लिए कर्म और कर्मफल की विधियों का निर्देश है। सम्पूर्ण पद्धति का सार काम, क्रोध और लाभ को त्यागना ही है। इस प्रकार ज्ञान का अनुशीलन करने पर स्वरूप-साक्षात्कार की परमोच्च अवस्था सुलभ हो सकती है, जिसकी पूर्णता भक्तियोग में है। अतएव भक्तियोग से युक्त बद्धजीव की मुक्ति निश्चित है। वैदिक शास्त्रों में चार वर्ण-आश्रमों का विधान भी इसी उद्देश्य से किया गया है। समाज की भिन्न-भिन्न वर्ण-जातियों के लिए अलग-अलग विधि-विधान हैं; जो मनुष्य इनका यथायोग्य पालन करता है, वह स्वरूप-साक्षात्कार की परमोच्च भूमि पर स्वतः आरूढ़ हो जाता है। तब उसकी मुक्ति में कुछ भी सन्देह नहीं रहता।

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।२३।।

यः=जो; **शास्त्रविधिम्**=शास्त्र-विधि को; **उत्सृज्य**=त्यागकर; **वर्तते**=आचरण करता है; **कामकारतः**=अपनी इच्छा से; **न**=न (तो); **सः**=वह; **सिद्धिम्**=सिद्धि को; **अवाप्नोति**=प्राप्त होता; **न**=न; **सुखम्**=सुख को; **न**=न; **पराम् गतिम्**=परम गति को।

अनुवाद

परन्तु जो मनुष्य शास्त्र-विधि को त्याग कर अपनी इच्छा के अनुसार आचरण